



वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 4

अप्रैल 2024

इस अंक में

- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व परिक्रमा- पृष्ठ : 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा-कविता : पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

आगामी अंक में

- प्रवासी कहानी संग्रह : परिचर्चा (05.05.2024)
- व्यावसायिक शिक्षा में हिंदी (12.05.2024)

विश्व का सबसे बड़ा साहित्योत्सव

सा

हित्य अकादमी ने 11 से 16 मार्च तक अपनी स्थापना के सत्तर वर्ष पूरे होने के अवसर को साहित्योत्सव के रूप में मनाया। नई दिल्ली स्थित कमानी ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह में भारतीय भाषाओं के 24 लेखकों को साहित्य अकादमी पुरस्कार 2023 प्रदान किए गए। कार्यक्रम में भाषा, साहित्य, संस्कृति, तकनीक, सर्जना, आधुनिक परिप्रेक्ष्य, प्रेरणाएँ, प्रवृत्तियाँ, विधाएँ आदि से संबंध रखने वाले विषयों पर मूर्धन्य विद्वानों-रचनाकारों द्वारा व्यापक विचार-विमर्श किया गया। विभिन्न भाषाओं में कविता पाठ, कहानी पाठ जैसे नियमित कार्यों के साथ साथ इस साहित्योत्सव में स्त्री सशक्तीकरण, जनजातीय कलाएँ व लेखन, एलजीबीटी जैसे नए नए विमर्श के क्षेत्रों में उभर रही रचनात्मकता और चिंतन को भी प्रकाश में लाने की कोशिश की गई। रचना-पाठ, परिसंवाद, चिंतन सत्रों आदि के साथ साथ इस साहित्योत्सव में गायन, नृत्य, रंगमंच आदि रूपकर कलाओं की भी प्रस्तुतियाँ हुईं। महत्तर सदस्यों का अभिनंदन, पुरस्कार विजेताओं के साथ बातचीत के अलावा इस कार्यक्रम में कम्बोडिया के श्री छुतेंग हुन को आनंद कुमारस्वामी फेलोशिप प्रदान करना भी एक महत्वपूर्ण आकर्षण रहा। कलाओं से जुड़ाव रखनेवाली महत्वपूर्ण राजनीतिक शख्सियतें, यथा, छत्तीसगढ़ और केरल के राज्यपाल, ने भी इस उत्सव में भागीदारी की। सुप्रसिद्ध सिने गीतकार एवं उर्दू अदब में स्थान रखनेवाले गुलजार लोगों में आकर्षण के केन्द्र रहे। वे साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एवं उर्दू साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक गोपीचंद नारंग के जीवन एवं कृतित्व पर परिसंवाद में भाग लेने आए थे।



छह दिवसीय इस समारोह को दुनिया का सबसे बड़ा साहित्योत्सव मानते हुए दुबई की आइंस्टीन वर्ल्ड रिकार्ड्स की टीम ने विश्व कीर्तिमान का

प्रमाण-पत्र साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक, उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा और सचिव के. श्रीनिवासराव को सौंपा। प्रमाण-पत्र में छह दिन चले दुनिया के इस सबसे बड़े साहित्योत्सव में 190 सत्रों में 1100 से अधिक लेखकों के भाग लेने और इसमें 175 से अधिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व होने को प्रमाणित किया गया।



काव्य रंग नॉटिंघम के 20 गौरवपूर्ण वर्ष

डॉक्टर महिपाल वर्मा ने 20 वर्ष पहले एक सपना देखा था। अपनी साहित्यकार पत्नी जय वर्मा के साथ मिल कर नॉटिंघम में पहली ऐसा संस्था की शुरुआत की जो हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन एक बड़े स्तर पर करे। उनके सपने पूरे हुए और काव्य रंग की बीसवीं वर्षगांठ नॉटिंघम में मनाई गई। काव्य रंग की बीसवीं वर्षगांठ पर 17 मार्च, 2024 को इंग्लैंड के प्रसिद्ध साहित्यिक शहर नॉटिंघम के हिन्दू टेम्पल में कवि सम्मेलन एवं पुस्तक विमोचन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 'काव्य रंग स्मारिका' का भी विमोचन किया गया, जिसमें काव्य रंग संस्था के बीस वर्षों की साहित्यिक गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। ख़ास बात यह रही कि इसे हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किया गया। ध्यातव्य है कि काव्य रंग एक बहुभाषीय संस्था है, जिसमें विविध भाषाओं जैसे- हिन्दी, उर्दू, पंजाबी एवं अंग्रेज़ी के रचनाकार अपना साहित्य रचते हैं। संस्था का उद्देश्य विशेषकर नए रचनाकारों को प्रोत्साहित करना तथा वरिष्ठ लेखकों के प्रेरणात्मक कार्यों को आगे बढ़ाना है। संस्था की सक्रियता का श्रेय इनके सदस्यों के साहित्य समर्पण एवं भाषा-प्रेम को जाता है। काव्य रंग संस्था द्वारा विविध भाषाओं के प्रति अनुराग मानवता का एक विशिष्ट दृष्टांत है। हिन्दी तथा अन्य



भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु इस साहित्यिक संस्था की स्थापना 7 नवम्बर, 2003 को ब्रेनकोट मेमोरियल हॉल, नॉटिंघम में हुई थी। जिसमें गैडलिंग के मेयर डॉ. राज चन्द्रन, भारतीय उच्चायोग, लंदन के हिन्दी एवं संस्कृति अधिकारी श्री अनिल शर्मा, बर्मिंघम से काउंसिल जेनरल श्री एन. पी. शर्मा, गीतांजलि बहुभाषीय समुदाय, बर्मिंघम से डॉ. कृष्ण कुमार, कथा यूके से श्री तेजेंद्र शर्मा एम.बी.ई., यूके हिन्दी समिति से डॉ. पद्मेश गुप्त, बर्मिंघम की महाकवि जूली बोडन, गीतांजलि समुदाय के कवि, लेखक एवं अन्य विद्वत जन तथा नॉटिंघम की विभिन्न संस्थाओं से गणमान्य व्यक्ति पधारे थे। कार्यक्रम में इस वर्ष 'डॉ. महिपाल वर्मा काव्य रंग साहित्यिक सम्मान' डॉ. निखिल कौशिक, वेल्स को प्रदान किया गया। पेशे से चिकित्सक डॉ. कौशिक कवि और लेखक होने के साथ-साथ फिल्म निर्माता भी हैं। उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि "काव्य रंग साहित्य को बढ़ावा देने और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।" लॉर्ड बायरन तथा डी.एच. लॉरेंस के शहर में आकर सभी अत्यंत प्रसन्न थे।

(रिपोर्ट : जय वर्मा, नॉटिंघम)

पूर्वोत्तर क्षेत्र में संपन्न भारतीय भाषा सम्मेलन की झलकियाँ



भारतीय भाषा सम्मेलन एक सफल आयोजन

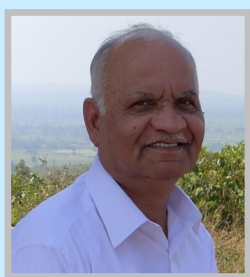


भारतीय भाषाओं का अभियान धीरे-धीरे गति पकड़ रहा है।

इस दृष्टि से भारतीय भाषा समिति के अध्यक्ष श्री चमू कृष्ण शास्त्री जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उच्च शिक्षा आयोग ने भी इस मामले में पहल की है और विभिन्न परीक्षाओं में अपनी भाषा में लिखने की छूट दी गई है। विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति को ध्यान में रखते हुए मिश्रित भाषा की भी छूट दी गई है और उसे जाँचा भी जाएगा। इससे अध्यापकों की भी जिम्मेदारी बढ़ी है और विद्यार्थियों के लिए भी व्यापक अवसर है। ऐसी स्थिति में इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार इंजीनियरिंग कालेजों में खाली सीटों की संख्या 81 प्रतिशत से 53 प्रतिशत रह गई है। इसका मुख्य कारण अपनी भाषा में उत्तर लिखने की अनुमति देना है। इसी प्रकार उच्च शिक्षा आयोग द्वारा भारतीय भाषाओं में पुस्तक तैयार करने का बीड़ा उठाना एक महत्वपूर्ण कदम है जो प्रशंसनीय है। ऐसे में भारतीय भाषा समिति के तत्वावधान में भारतीय भाषा मंच जैसी संस्थाओं के सहयोग से विभिन्न केंद्रीय विश्वविद्यालयों में मार्च 2024 में भारतीय भाषा सम्मेलनों का आयोजन एक महत्वपूर्ण प्रयास है। सरकार की पहल से समाज, विशेष रूप से युवाओं को जोड़ना होगा। ऐसे कुछ समाचार इस न्यूज लेटर में भी छपे हैं। हमें समाज की भागीदारी को अधिक सघन और गतिशील बनाने के प्रयास करने होंगे।

अनिल शर्मा 'जोशी'
अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

संपादक की कलम से...



भाषा को सभ्यता और संस्कार की वीणा कहा जाता है। भाषा की वाई-फाई इतनी हाई-फाई होती है कि उसका नेटवर्क हर जगह होता है। अतएव दुनियाँ की सभी भाषाओं का सम्मान और प्रयोग बढ़ाना हम सबका दायित्व है। भाषा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी से नित नए चमत्कारिक परिणाम जगजाहिर हैं। कृत्रिम मेधा से भी नए गवाक्ष खुले हैं। समय, हर समय को बदल देता है। समय को भी थोड़ा समय चाहिए।

गत अंकों की भांति इस अंक में भी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय भाषा परिचर्चाओं सम्मेलनों, संगोष्ठियों, वैश्विक हिन्दी परिवार के रविवारीय कार्यक्रमों, पुस्तक समीक्षाओं और साक्षात्कार आदि का समावेश है। सम्मेलनों से अनेक प्रयोजनों का सिद्ध होना स्वाभाविक है। हम सबके सम्मिलित प्रयासों से प्रत्येक रविवारीय मंथन में भाषा, संस्कृति और प्रौद्योगिकी आदि के साथ अमृतम प्रियदर्शनम रूपी पौष्टिक अवलेह प्रस्फुटित होता है। ज्ञातव्य है कि पुस्तकें मुद्रित शब्दों का ब्रह्मांड होती हैं। असार से सार और शब्दों के पार का संसार होती हैं और चैतन्य उत्पन्न करती हैं। पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं के बिना इतिहास मौन, साहित्य गूंगा, विज्ञान अपंग और विचार स्थिर माने जाते हैं।

यह पत्रिका भाषा सेवा हेतु एक लघु प्रयास है। आइए, हम भाषाओं की श्रीवृद्धि के लिए गतिशील रहकर खुद से वादा, मेहनत ज्यादा और मजबूत इरादा रखें।

-डॉ. जयशंकर यादव

आपकी प्रतिक्रिया

वैश्विक हिन्दी पत्रिका, विश्व स्तर पर हिन्दी प्रचार अभियान का एक विशिष्ट मुखपत्र है। प्रथम दृष्ट्या यह प्रख्यापित कर देती है कि हिन्दी का परचम कहाँ-कहाँ फहरा रहा है। संक्षेप में वैश्विक संगोष्ठियों, पुस्तक मेलों, विभिन्न मातृभाषा प्रचार समितियों, नए उपक्रमों और विशिष्ट प्रोत्साहनों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी परोसी गई है। इस पत्रिका का कलेवर और सम्पादन प्रशंसनीय है। पूरी पत्रिका रंगीन और नयनाभिराम है।

-डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र
पूर्व संयुक्त निदेशक, राजभाषा, संसद भवन, दिल्ली

वैश्विक हिन्दी परिवार की वैश्विक हिन्दी पत्रिका का तृतीय अंक पढ़कर बड़ी सुखद अनुभूति हुई। हिन्दी को विश्व की लोकप्रिय भाषा बनाने का प्रयास सराहनीय है। प्रो. तोमिओ मिज़ोकोमी के साक्षात्कार में जापान में हिन्दी के प्रति बढ़ता रुझान मन को आह्लादित करता है तो उनका यह कथ्य कि हिन्दी के विकास में भारतीय सरकारी तंत्र की अंग्रेजियत सबसे बड़ी रुकावट है, सोलह आने सच है। अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के आयोजन अनुकरणीय हैं। पत्रिका के सम्पादकीय सहयोगियों को बहुत बहुत बधाई, मेरा शत शत नमन वंदना।

-श्रीकान्त सिंह
लखीमपुर खीरी उप्र.

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन, भारतीय भाषा मंच और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

प्रवासी साहित्य पर शोध –एक विमर्श

(3 मार्च 2024)



कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा के भाषा विज्ञान पीठ के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप कुमार श्रीधर द्वारा की गई। उन्होंने कहा कि प्रवासी साहित्य में शोध की अपार संभावनाएं हैं। इसकी गुणवत्ता और आकलन पर यथेष्ट ध्यान आवश्यक है। दुनियाँ के विभिन्न देशों में करोड़ों प्रवासियों ने अपनी मेहनत के बलबूते संबन्धित देशों की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। उनकी सूक्ष्म संवेदना और गहरी अंतरदृष्टि तथा जीवन दर्शन प्रवासी लेखन में साफ झलकता है। मेरठ विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. नवीन चन्द्र लोहानी का कहना था कि अब प्रवासी साहित्य विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता से स्थान पाने लगा है। युगीन परिस्थितियों के अनुसार शोध क्षेत्र में महाद्वीपवार भी समुचित विशद कार्य अपेक्षित है। शोध से संबन्धित सामग्री मिलना अब अपेक्षाकृत आसान हो गई है। ऑनलाइन बैठकें भी बहुत फायदेमंद हैं।

इग्नू, दिल्ली के प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव ने कहा कि प्रवासियों ने अपने विपुल साहित्य में परिधि, घनत्व और आयतन आदि का विस्तार किया है। प्रवासियों से भारत छूटा और गैर हाजिर होता है। वहाँ के समाज में भी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ चलन में नहीं होती हैं। इसके बावजूद प्रवासियों द्वारा भारतीय भाषाओं में लेखन अबाध गति से किया जाता है। इस पर समुचित मूल्यांकन और अनुसंधान होना चाहिए। इसके ट्रेंड पर भी शोध हो। शोध के विषय यथार्थ निकालने वाले हों। साहित्य के इतिहास लेखन में भी प्रवासी लेखन की प्रवृत्तियों आदि का उल्लेख हो। शोधार्थी अपनी अभिरुचियों को शोध पर न थोपें तथा प्रवासी साहित्य को कमतर न आँका जाए। वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं प्रवासी साहित्य मर्मज्ञ श्री अनिल जोशी का मन्तव्य था कि प्रवासी लेखन नया वितान है। सूचना प्रौद्योगिकी और नेटवर्किंग ने शोध कार्य आसान किया है। इस माध्यम से प्रवासी लेखकों से जुड़ने की व्यवस्था की जा सकती है। आजकल बच्चों के विदेश चले जाने के बाद भारत में भी असंख्य वरिष्ठ नागरिक एकाकी जीवन बिताते हैं। हमें शोध में समाज विज्ञान का भी सहारा लेना होगा। प्रवासी सत साहित्य स्तुत्य है।

कार्यक्रम के दौरान प्रवासी साहित्य के शोधार्थियों द्वारा सवाल पूछे जाने पर वक्ताओं द्वारा बेबाक विश्लेषण सहित उत्तर दिये गए। इनमें चंडीगढ़ से सुयमबदा, दिल्ली से नितिन मिश्रा और अपूर्वा, रोहतक से पूजा, कोचीन से श्रीना श्रीनिवासन, हैदराबाद से प्रियदर्शनी, आगरा से नीतू सिंह मध्य प्रदेश से पायल, पंजाब से सपना सैनी, हरियाणा से दिलबाग सिंह और मुंबई से खुशी वशिष्ठ आदि सम्मिलित थे। आरंभ में वैश्विक हिन्दी परिवार की ओर से सबका स्वागत किया गया। मौके पर अनेक विद्वान-विदुषी और शोधार्थी सहभागी थे। हिन्दी राइटर्स गिल्ड कनाडा की सह संस्थापिका डॉ. शैलेजा सक्सेना द्वारा बखूबी संचालन किया गया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के प्रो. मुन्ना लाल गुप्ता द्वारा मनः पूर्वक आभार प्रकट किया गया।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

जापान में हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण

(10 मार्च 2024)



कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पद्मश्री से सम्मानित प्रो. तोमियो मिजोकामि ने अपनी दीर्घकालिक अनुभवजन्यता से कहा कि हिन्दी और जापानी का प्रगाढ़ संबंध है। जापानी, हिन्दी, संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी और पंजाबी भाषाओं के ज्ञाता और ओसाका विश्वविद्यालय में एमिरेट्स प्रोफेसर मिजोकामि का मानना था कि अनेकता में एकता हिन्द की विशेषता है जो दुनियाँ में बेजोड़ है। जापान और भारत में कार्यरत रहकर इसकी प्रगति का लगभग हर चरण सात दशकों से मैंने निज नयनों से देखा और महसूस किया है। धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे, सहज ही चरितार्थ होकर आकर्षित करता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय दूतावास जापान में पूर्व प्रोफेसर डॉ. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि जापान में हिन्दी के माध्यम से लोग भारत को जानना चाहते हैं अतएव बड़ी संख्या में हिन्दी सीखते और धार्मिक वा सांस्कृतिक आयोजनों में आते हैं जिसमें राजनयिक प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर दर्जनों देशों के साहित्यकार, विद्वान-विदुषी, प्राध्यापक, अनुवादक, शोधार्थी और सैकड़ों भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

शुरुआत में कवयित्री डॉ. अलका सिन्हा द्वारा अभिप्रेरक पृष्ठभूमि सहित स्वागत किया गया। तत्पश्चात रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के प्रवासी सलाहकार एवं जापान से लौटे डॉ. जवाहर कर्नावट ने संचालन संभाला। बीज वक्तव्य देते हुए ओसाका विश्वविद्यालय जापान के डॉ. वेद प्रकाश सिंह का कहना था कि लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद दोनों देशों के संबंध मैत्री, सौहार्द्र और सहयोगपूर्ण रहे हैं। जापान में हिन्दी विभाग का सौ वर्षों से अधिक का गौरवशाली इतिहास है। जापानी लोग सुभाषचंद्र बोस, गुरुदेव टैगोर और महात्मा गांधी आदि से बहुत प्रभावित हैं। पद्मश्री प्रो. तोमियो मिजोकामि प्रेरणापुंज हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज जापान के प्रो. सूरज प्रकाश ने बताया कि इन दोनों भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति अब चुनौतियाँ बढ़ी हैं। हिन्दी महोत्सव का आयोजन उत्साहवर्धक है। जापान में हिन्दी की गूँज पत्रिका की संपादक एवं स्वयं सेवी शिक्षिका डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा ने कहा कि बड़ी संख्या में जापान में भारतीयों के आगमन से चकाचौंध रहती है। यहाँ पंजाबी की भी गूँज है तथा भारतीय संस्कृति के प्रति बहुत आकर्षण है।

दशकों तक जापान में रह चुके लेखक प्रो. हरजेंद्र चौधरी का मानना था कि जापान में हिन्दी के साथ संस्कृत और पाली के प्रति भी आकर्षण है। बौद्ध अनुयायियों की संख्या में बढ़ोत्तरी नव जागरण काल सदृश है। जापानी लोग अन्य आयातित सूचना पर कम भरोसा करके भारत को भारतीय भाषाओं के माध्यम से समझना चाहते हैं। जापानी भाषा एवं साहित्य की पूर्व प्रोफेसर उनीता सच्चिदानंद ने कहा कि उन्होंने जापानी-हिन्दी और हिन्दी-जापानी शब्द कोश स्वयं बनाया जिससे अनूदित सामग्री और शिक्षण में सहायता मिली। जापानी लोग गीता, रामायण, महाभारत और पुराण आदि से बहुत प्रभावित हैं जिससे भाषा संस्कृति का बहुत प्रचार-प्रसार हुआ। वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी का समादर करते हुए कहा कि सॉफ्टवेयर युग में भाषा सीखना आसान हुआ है। हिन्दी के माध्यम से जापानी सीखना भी आसान है। निश्चय ही वसुधैव कुटुंबकम को बढ़ावा मिलना चाहिए। डॉ. सुरेश कुमार मिश्र ने आत्मीयता से धन्यवाद ज्ञापित किया।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

अनुवादिनी : भारत सरकार अद्यतन सॉफ्टवेयर

(17 मार्च 2024)



सूचना प्रौद्योगिकी के नित नए बढ़ते चरण के मद्देनजर वैश्विक हिन्दी परिवार की ओर से अनुवादिनी नामक अद्यतन सॉफ्टवेयर पर सारगर्भित चर्चा हुई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए लब्ध प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकीविद एवं माइक्रोसॉफ्ट के निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने कहा कि अनुवादिनी सॉफ्टवेयर के लिए श्री बुद्ध चन्द्रशेखर की शोध और सतत सत प्रयत्न स्तुत्य है। भारत सरकार के अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के इस प्रयास का व्यापक वैश्विक प्रभाव होगा। अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सह संयोजक श्री ए. विनोद ने कहा कि भारतीय भाषाओं और ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने में अनुवादिनी सदृश आधुनिक सॉफ्टवेयर मील के पत्थर हैं। हमें कौशल विकसित कर इनका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार, विद्वान-विदुषी, प्राध्यापक, अनुवादक, शोधार्थी और सैकड़ों भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

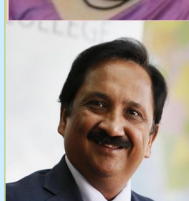
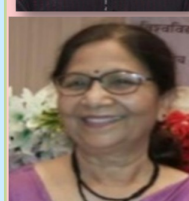
आरम्भ में डॉ. जयशंकर यादव द्वारा अभिप्रेरक पृष्ठभूमि सहित आत्मीयतापूर्वक स्वागत किया गया। तत्पश्चात गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक एवं तकनीकीविद डॉ. मोहन बहुगुणा ने सधे और संतुलित शब्दों में संचालन का बखूबी दायित्व संभाला। उन्होंने वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए सहज भाव से प्रस्तुति हेतु आमंत्रित किया।

अनुवादिनी पर अपनी नई शोध आधारित जीवंत प्रस्तुति देते हुए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के मुख्य समन्वयक अधिकारी श्री बुद्धा चन्द्रशेखर ने कहा कि यह भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की अनोखी पहल है जो अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। इसमें विभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद को आसान बनाने के लिए एआई का उपयोग है। इसका उद्देश्य शिक्षा में बहुभाषावाद को बढ़ावा देना अध्ययन सामग्री को सुलभ कराना और बहुभाषी विरासत को संरक्षित करना है। इसमें भारत की 22 क्षेत्रीय भाषाएँ और विदेशी भाषाएँ भी हैं। अनुवादिनी में भाषण से पाठ और पाठ से भाषण दोनों का समर्थन है। यह योजना दस्तावेजों के अनुवाद का समर्थन करती है तथा ऑनलाइन और ऑफ लाइन रूप में उपयोग की जा सकती है। श्री बुद्धा चन्द्रशेखर ने बताया कि इसे अन्य सरकारी विभागों और व्यवसाय, पर्यटन सामाजिक क्षेत्र तथा आम जनता तक विस्तारित करने की योजना है। एआईसीटीई की वेबसाइट से मदद ली जा सकती है। अंत में हैदराबाद से साहित्यकार डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उत्तम', द्वारा आत्मीयता से धन्यवाद दिया गया।

(रिपोर्ट : जयशंकर यादव)

होली के अवसर पर व्यंग्य पर केन्द्रित विशेष कार्यक्रम

(24 मार्च 2024)



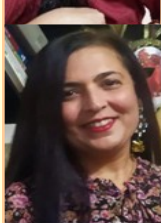
रंगोत्सव होली की पूर्व संध्या पर वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा 24 मार्च को रविवारीय कार्यक्रम में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को प्राप्त प्रतिष्ठित व्यास और वनमाली सम्मान के उपलक्ष्य में अभिनंदन और व्यंग्य पठन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता के दौरान वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला ने सभी रचनाकारों को सौमण्डल की संज्ञा देते हुए पैनी रचनाएँ सुनाने पर प्रशंसा की। उन्होंने पद्मश्री से सम्मानित डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी को व्यंग्य का मिलखा सिंह और आधुनिक युग को ज्ञान चतुर्वेदी युग कहने पर सहमति प्रकट की। सूर्यबाला जी ने ज्ञान जी को अपने कर-कमलों से तीन बार शीर्षस्थ पुरस्कार देने पर हर्ष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि व्यंग्यकार बहुत गहरा सोचता है। ज्ञान जी चिकित्सा के जीवनदायी नुस्खे लिखते हुए बुलेट प्रूफ बेमिसाल योद्धा की तरह डटे हैं। उनके द्वारा नास्टेल्लिज्या यानी जन्म भूमि के प्रति ललक पर आधारित जहाज के किराये से संबन्धित अपना पुराना व्यंग्य सुनाकर व्यवस्था पर कटाक्ष किया गया। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

अपने सम्मान के प्रतियुत्तर में डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि तारीफें सुनना दुधारी तलवार-सा है जो बचाती और काटती भी है। हम निहितार्थ समझकर अच्छे की पीठ थपथपाएँ। कमजोर रचना लेखक की कमजोरी है। कभी-कभी तारीफों में कहे गए शब्द खोखले होते हैं जिनसे हमें बचना चाहिए। आज का समय जल्दबाज़ी का है। उपन्यास लिखना अपेक्षाकृत कठिन होता है। उन्होंने अपनी किताब 'एक तानाशाह की प्रेम कथा' को संतोषजनक रचना माना और इसके अंत पर प्रसन्नता प्रकट की। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित ज्ञान जी ने कहा कि सत्तर वर्ष की उम्र में प्रेम पर लिखना कठिन है। किसी को ज्यादा प्रेम करने पर वह तानाशाह सा हो जाता है। उन्होंने बताया कि उनके पटकथा लेखन पर दो फिल्में आने वाली हैं तथा साधुओं के जीवन पर भी लेखन कार्य कर रहे हैं। उनके द्वारा युवा लेखकों को तिकड़मी रचनाकारों और सस्ती लोकप्रियता से बचने की सलाह दी गई।

(शेष पृष्ठ 4 पर.....)

हिंदी शिक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका

(31 मार्च 2024)



वैश्विक हिन्दी परिवार द्वारा 31 मार्च को पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय अमेरिका के पूर्व आचार्य प्रो. सुरेन्द्र गंधीर की अध्यक्षता में “हिन्दी शिक्षण में सोशल मीडिया की भूमिका, विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर भाषा शिक्षण के चारो कौशल विद्यमान हैं किन्तु पढ़ने का चलन अधिक है। इससे शिक्षकों और विद्यार्थियों को नई दिशा मिलेगी। प्रारंभिक स्तर से लेकर शोध कार्य तक प्रवीणता के मानदंडों के अनुसार भी प्रचुर मात्रा में सामग्री सहज रूप से मिल जाती है। दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन सुविधा उपयोगी सिद्ध हुई है। भाषा शिक्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अधिकाधिक उपयोगिता है। उन्होंने अमेरिका के मिलिंद रानाडे द्वारा निर्मित एक स्पष्ट हिन्दी उच्चारण वाला चमत्कारिक वीडियो भी सुनाया जो सीखने और बोलने में बहुत सहायक है। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार, विद्वान-विदुषी, प्राध्यापक, शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

आरम्भ में स्पेन में हिन्दी गुरुकुल की संस्थापक सुश्री पूजा अनिल द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. विजय कुमार मिश्र ने सधे शब्दों से संचालन का दायित्व संभाला। विशेष वक्ता के रूप में उज्बेकिस्तान के ताशकंद विश्वविद्यालय की डॉ. नीलुफर खोजाएवा ने कहा कि सोशल मीडिया के माध्यम से अब ऑनलाइन कक्षाओं में भारतीय विद्वानों के साथ, ताशकंद में भारत जैसा ही हिंदीमय माहौल मिलने लगा है। उज्बेकिस्तान में हिन्दी में पीएच.डी. तक की पढ़ाई होती है और सभी स्तरों पर दिल्ली के तीनों शीर्षस्थ विश्वविद्यालयों के साथ हिन्दी उज्बेकी यूथ फोरम है। विद्यार्थी भारतीय प्राच्य विद्या उज्बेकी में भी पढ़ते हैं जिसमें मीडिया से समाचार पत्र आदि सीधे ही उपलब्ध हैं। अब केवल सदुपयोग एवं अनुश्रवण की निहायत जरूरत है। गृहस्वामिनी पत्रिका की संपादक एवं तकनीकीविद अर्पणा संत सिंह ने कहा कि कोरोना के बाद ऑनलाइन डिग्री, यू.ट्यूब, ट्वीटर, ई.पाठशाला, ई.लर्निंग और डिजिटल लाइब्रेरी आदि का चलन बहुत बढ़ा है। सोशल मीडिया से शिक्षण में दूर-दराज के गरीब बच्चों की भी पढ़ाई हो जाती है। यदि सदुपयोग और प्रचुर मात्रा में प्रयोग हो तो यह माध्यम स्वयं सिद्ध है। समयानुसार इसके परिमार्जन की आवश्यकता है।

यूक्रेन के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. यूरि बोत्वोकिन ने कहा कि सोशल मीडिया में अपेक्षाकृत अच्छाई अधिक है। इसके बिना अधुनातनता मुश्किल है। जब कक्षा में ही विद्यार्थी वीडियो आदि देखने लगते हैं तो पहले की तरह खिड़की से बाहर प्राकृतिक दृश्य देखने की अपेक्षा, नियंत्रण करना कठिन होता है। सोशल मीडिया के क्रमिक विकास से नया जमाना आ गया है और दृश्य-श्रव्य, अनुवाद एवं सीधा संपर्क आदि बहुत आसान हो गया है तथा गूगल भाई मददगार हो गया है। नया साहित्य यात्रिक जीवन से भरपूर है। विश्व रंग भोपाल में सहभागी और प्रेरित हो चुके विद्वान प्रो. यूरि का मानना था कि यू.ट्यूब पर विपुल जानकारी उपलब्ध है जिसके नीर-क्षीर विवेकी विश्लेषण की जरूरत है। दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में हिन्दी के मीडिया प्रमुख डॉ. आतिश पाराशर ने कहा कि उपयोगकर्ता के नाते सोशल मीडिया हेतु हम कितने जिम्मेदार हैं? आज मोबाइल खो जाना, किडनी निकाल लिए जाने से ज्यादा बेचैन करने वाला हो गया है। इसमें मुख्यतया चार परिवर्तन आए हैं। 1- श्रोता अधिकाधिक प्रतिभागी हो गया है। 2- मुद्रित माध्यम की उपयोगिता कम हुई है। 3- निर्णय लेने की क्षमता कम हो रही है। 4- हम ऐसे युग में हैं जहां ऐसे देकर विशिष्ट बन सकते हैं। जब हम अमेरिका में बैठकर अपने गाँव की खबर ले सकते हैं तो इसके उपयोग की जिम्मेदारी क्यों नहीं ले सकते। हम सोशल मीडिया का न्यायपूर्ण उपयोग करें ताकि ज्ञान-प्रेम फैले और नफरत-निरंकुशता रुके। अटलांटा स्थित अमेरिका के एमरी विश्वविद्यालय प्रो. ब्रजेश समर्थ ने सोशल मीडिया के श्वेत-श्याम पक्ष को पीपीटी के माध्यम से प्रस्तुत किया। श्वेत पक्ष में कुछ निम्न बिन्दु हैं – 1- बड़ी मात्रा में एक साथ शिक्षण 2- आडियो-वीडियो 3- आसानी से उपलब्धता 4- भाषा कौशल का अभ्यास आसान 5- मातृभूमि और भाषा से सीधा जुड़ाव 6- समुदाय विशेष से सीधा संवाद 7- अभिप्रेरण आदि। श्याम पक्ष के अंतर्गत 1- अधिकाधिक सूचना के साथ बीच-बीच में अन्य सूचनाओं के आ जाने से भटकना 2- सूचना में विश्वसनीय स्रोत की कमी 3- भटकाव की संभाव्यता 4- बोलने के कौशल की सीमितता। 5- भ्रामक सांस्कृतिक चुनौतियाँ 6- गलत समूह में फँस जाने का खतरा। अतएव इस क्षेत्र में शिक्षक – अभिभावक विशेष जिम्मेदारी निभाएँ।

होली के अवसर पर व्यंग्य पर केन्द्रित विशेष कार्यक्रम (पृष्ठ 3 से आगे...)



आरम्भ में भोपाल से हिन्दी साहित्यकार डॉ. जवाहर कर्नावट द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात जयपुर से व्यंग्यकार एवं उद्बोधक प्रभात गोस्वामी ने सधे शब्दों में मर्यादित ढंग से संचालन का बखूबी दायित्व संभाला। दिल्ली से जुड़े व्यंग्यकार डॉ. राजेश कुमार ने होली की ठिठोली में “चुनाव का साल और होली का गुलाल, शीर्षक से तुलनात्मक रचना सुनाकर व्यंग्य साधा और एकरूपता के साथ प्रहार किया। कनाडा से श्री धर्मपाल महेंद्र जैन ने व्यंग्य के अखाड़े के उस्तादों को नमन करते हुए “शब्द की कसरत, शीर्षक से कलाबाजियाँ कराई और व्यंग्यकारों को भाषा सुधारने की सलाह दी। व्यंग्यकार श्री शांतिलाल जैन ने “मकान की डिजाइन, आर्किटेक्ट और नल की टोंटी, के अदृश्य और न समझ आने वाले कार्य का उदाहरण देते हुए व्यवस्था पर चोट की और संभलकर चलने की सलाह दी। अगले चरण में रायपुर से संपादक गिरीश पंकज ने “देश के विकास में पियक्कड़ों का योगदान, शीर्षक से सुबह और शाम, जो भरते हैं जाम, उनकी दशा और दिशा पर व्यंग्य कसा तथा भ्रामक, तथ्यों से परे व आधारहीन बातों से बचने की सलाह दी।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं व्यंग्यकार श्री अनिल जोशी ने सम्मानित किए गए साहित्यकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी का सबकी ओर से अभिनंदन किया तथा व्यंग्य के शलाका पुरुष डॉ. प्रेम जनमेजय को 75वें जन्म दिन की बधाई दी। उन्होंने व्यंग्य के क्षेत्र में नामचीन हस्तियों की उपस्थिति पर हर्ष प्रकट किया। श्री जोशी जी ने “मैच फिक्सिंग, शीर्षक से व्यंग्य सुनाते हुए भ्रष्टाचार के विषाक्त माहौल पर प्रहार किया जो केवल क्रिकेट तक ही नहीं बल्कि भर्ती और नौकरी आदि अनेक क्षेत्रों में व्याप्त है। कार्यक्रम का संचालन कर रहे व्यंग्यकार श्री प्रभात गोस्वामी ने “क्रिकेटर का प्रेम, शीर्षक से व्यंग्य सुनाया और रोमांस के मायाजाल से बचने की सलाह दी। युवा व्यंग्यकार डॉ. सुरेश कुमार मिश्र “उरतृम, ने “किताबों की अंतिम यात्रा, पर अनूठा व्यंग्य किया और पुस्तकों की मर्यादा का अनुरक्षण करने हेतु ध्यान खींचा।

दशकों से “व्यंग्य पत्रिका, का सम्पादन कर रहे व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय ने अपने पचहत्तरवें जन्म दिन की बधाई स्वीकार करते हुए कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने “प्रजातन्त्र का कृपा काल, शीर्षक से कवितामय उक्तियों वाला सशक्त व्यंग्य सुनाया। उनका कहना था कि प्रजातन्त्र बिना कृपा तंत्र के नहीं चलता। तुम मुझे वोट दो मैं तुम्हें कृपा दूंगा। चुनाव की दुपहरी में भी आंधी चलती है। उसमें भी साकार और निराकार रूप निहित हैं। इसलिए हमें शतरंज के पैदल सिपाही की तरह बचकर बाहर निकल जाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत व्यंग्यकार डॉ. हरीश नवल ने “तुसी करदे की हो यानी तुम करते क्या हो, शीर्षक से व्यंग्य सुनाकर प्राध्यापकों और साहित्यकारों की सामाजिक हेय समझे जाने वाली स्थिति पर प्रहार किया जिसे सुनने के बाद धूल झाड़कर चल देने के सिवा किसी के पास कोई विकल्प नहीं था। अंत में हैदराबाद से साहित्यकार डॉ. सुरेश कुमार मिश्र “उरतृम, द्वारा आत्ममयीता से धन्यवाद दिया गया। समूचा कार्यक्रम होली के हास्य और लास्य से ओतप्रोत जीवन तरंगों से उल्लासित था।

वै.हि.प. की रिपोर्ट – डॉ. जयशंकर यादव)

सीधे विमर्श के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. राजेश कुमार गौतम का मत था कि सोशल मीडिया तत्काल जिज्ञासा शांत कर सकता है किन्तु आशातीत परिणाम कम हैं। विदेशियों को हिन्दी सिखाने के लिए अलग मंच की निहायत जरूरत है। कोचीन विश्वविद्यालय की शोधार्थी श्रीना श्रीनिवासन का कहना था कि सोशल मीडिया से आलोचनात्मक अभिव्यक्ति को नुकसान पहुँच रहा है। शिक्षकों के पास समय कम पड़ रहा है और विद्यार्थी इसमें अधिक कुशल हैं तथा दूसरों को सुनने के लिए समय नहीं दे पा रहे हैं। दिल्ली की अपूर्वा सिंह का मानना था मानक हिन्दी के अनुरूप सामग्री का अभाव है। शोध में पुस्तकालय ज्यादा कामयाब हैं।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं कवि, लेखक श्री अनिल जोशी ने मन्तव्य दिया कि सोशल मीडिया के साथ पाठक का जुड़ना क्रांतिकारी परिवर्तन है। अब लाखों पुस्तकें उँगलियों पर उपलब्ध हो जाती हैं। पाठ के दृश्य तक पहुँचाना ज्यादा प्रभावशाली होता है। निश्चय ही भाषा की विमर्शियाँ चिंताजनक हैं। हम सोशल मीडिया का विवेक से इस्तेमाल करें और भाषा की विद्रुपता से बचें। अंत में चीन से प्रो. विवेक मणि त्रिपाठी द्वारा धन्यवाद दिया गया।

सभी कार्यक्रम प्रति सप्ताह वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन और सुयोग्य समन्वयन में संचालित होते हैं। समूचे कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार, शीर्षक से “यू.ट्यूब, पर उपलब्ध हैं।

वै.हि.प. की रिपोर्ट – डॉ. जयशंकर यादव)

बोलियों की मिठास और उनकी अकूत सम्पदा

लंदन: ‘बोलियों की मिठास और उनकी अकूत संपदा’ विषय पर दिनांक 30 मार्च, 2024 को साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था वातायन-यूके (लंदन) के तत्त्वावधान में संगोष्ठी-174 का ऑनलाइन आयोजन हुआ। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अनिल शर्मा जोशी द्वारा की गई। सिंगापुर साहित्य संगम की सुश्री आराधना झा श्रीवास्तव ने बखूबी संचालन किया।

इस कार्यक्रम के प्रतिभागी वार्ताकार थे—लोकसाहित्य और नवगीत के हस्ताक्षर डॉ. जगदीश व्योम तथा आकाशवाणी की सुप्रसिद्ध पूर्व-उद्बोधिका तथा साहित्यकार सुश्री अलका सिन्हा। लोक साहित्य, लोक गीत, लोक भाषा और लोक जीवन के परिप्रेक्ष्य में यह संगोष्ठी अत्यंत दिलचस्प और ज्ञानवर्धक रही तथा ज़ूम, यूट्यूब, फ़ेसबुक एवं अन्य सोशल मीडिया के ज़रिए बड़ी संख्या में श्रोता-दर्शक इस कार्यक्रम से आद्योपांत जुड़े रहे। इस संगोष्ठी में अवधी, ब्रज, मैथिली और भोजपुरी लोकभाषाओं के साहित्य, इनके गीति-काव्य और इनसे संबद्ध लोगों के बारे में उपयोगी चर्चा हुई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सुश्री आराधना झा श्रीवास्तव ने मिथिला के कवि विद्यापति की एक कविता की एक पंक्ति—‘देसी बैना सब जन मिट्टा’ उद्धृत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम लोक बोलियों की मिठास और उनकी अकूत संपदा पर केंद्रित है। उन्होंने कुछ लोक भाषा के अध्येताओं यथा, ग्रियर्सन, सुनिति कुमार चटर्जी, धीरेंद्र वर्मा आदि का उल्लेख किया। अलका सिन्हा ने कहा कि इन लोक भाषाओं में हम जितना उतरते जाते हैं, उनके प्रति हमारी पिपासा उतनी ही बढ़ती जाती है। डॉ. व्योम ने बताया कि फ़िल्मों में या शहरों में लोक गीत के नाम पर जो गीत गाए-सुने जाते हैं, उनमें लोकगीत का तत्त्व कोई पाँच से दस प्रतिशत तक ही रह जाता है। फ़िल्मों में प्रोफ़ेशनल गायकों द्वारा गाए गए लोक गीतों की एक तरह से हत्या हो गई है। जहाँ तक विभिन्न क्षेत्रों में लोक गीतों का सम्बन्ध है, उनमें एक प्रकार की एकरूपता होती है क्योंकि हमारी

संवेदनाएँ एक जैसी ही हैं। मूल संवेदनाओं में कृत्रिमता के आने से लोकगीत की मौलिकता का क्षरण होता जा रहा है।

तदनंतर, सुश्री ऋतुप्रिया खरे ने अवधी में कुछ होरी गीत, जैसे ‘होरी खेलें रघुबीरा अवध मा, होरी खेलें रघुबीरा’ और ‘रंग लई के दौरै हनुमान जी, राम जी बच के भागे’ गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। लोकप्रिय भोजपुरी लोक गीत ‘रैलिया बैरन पिया को लिए जाय रे’ नारी-मन की ऐसी ही भावना को व्यक्त करता है। विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला ‘गाली’ लोक गीत मिठास से भरा होता है।

आराधना झा श्रीवास्तव ने सूरदास जी द्वारा ब्रज भाषा में विरचित एक भजन ‘दधि मांगत और रोटी गोपाल, माई’ को गाकर मंच को गुंजायमान कर दिया। इसी क्रम में श्री मनोज कुमार सिन्हा ने विद्यापति की मैथिली में लिखी गई एक गंगा-स्तुति ‘बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे’ गाकर सुनाया। श्री रत्नेश पांडे ने लोक गीतों को शाश्वत बताते हुए कहा कि इनके रचनाकार, रचनाकाल, रचना-क्षेत्र के बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं होता है। ‘चड़ता’ और ‘फनुवा’ लोकगीतों की चर्चा करते हुए उन्होंने एक छठ गीत ‘गुणवा ना सोहेला’ और जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला एक ‘सोहर’—‘जुग-जुग जिय सू ललनवा, भवनवा के भाग जागल हो’ सुनाया। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे श्री अनिल जोशी जी ने अपने वक्तव्य में इस मंच के लोकगायकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि इन्हें इस मंच पर और भी मौक़ा दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोक भाषाओं और बोलियों का इतिहास बहुत प्राचीन है। ये बेहद लोकप्रिय भी रही हैं जिसका अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बांग्ला कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी पहली कविता ब्रज भाषा में ही लिखी थी। उन्होंने ब्रज भाषा के कवि भारतेन्दु जी की चर्चा करते हुए कहा कि लोक भाषाओं की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अवधी में तुलसीदास द्वारा विरचित रामचरित मानस विश्व-प्रसिद्ध काव्य है। अवधी को मधुर भाषा बताते हुए उन्होंने भोजपुरी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बताया जिसे मॉरीशस में बहुतायत से बोला जाता है।

कार्यक्रम का समापन श्री अभिषेक त्रिपाठी द्वारा मंचासीन अध्यक्ष, प्रतिभागी संवादकारों और लोकगायकों को धन्यवाद-ज्ञापन से हुआ। संगोष्ठी में विशेष तकनीकी सहयोग देने के लिए कृष्ण कुमार जी के प्रति भी आभार प्रकट किया गया।

(रिपोर्ट – डॉ मनोज मोक्षेंद्र)

कजाकिस्तान के अल्माटी शहर में पहली बार अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन

वाराणसी: भारत और कजाकिस्तान के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के कारण पहली बार अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक व्यावहारिक हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम अल-फराबी कजाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित अल-फराबी कजाख राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगांठ और प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगांठ को समर्पित महत्वपूर्ण विषय हयूरेशिया और भारत में हिंदी का वर्तमान और भविष्य विषय के परिपेक्ष्य में हुआ। यह दो दिवसीय कार्यक्रम 13 और



14 मार्च 2024 कजाकिस्तान के अल्माटी शहर में सम्पन्न हुआ। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में भारत और कजाकिस्तान के अतिरिक्त अन्य देशों के भी प्रतिभागी उपस्थित रहे। अनेक प्रतिभागियों में शामिल प्रो डॉ बलराम गुप्ता हिंदी विभाग शिवहरष किसान पीजी कॉलेज बस्ती ने भी अपना शोध पत्र ह्यहिंदी भाषा के ऐतिहासिक संपर्क पर प्रस्तुत किया। शोध पत्र वाचन के पश्चात प्रो डॉ बलराम गुप्ता की कृतियों का विमोचन भी किया गया। संपादक द्वय प्रो डॉ बलराम गुप्ता, अमित गुप्ता द्वारा संपादित कृति ह्यभगवानदास मोरवाल की रचनात्मक उर्वरता

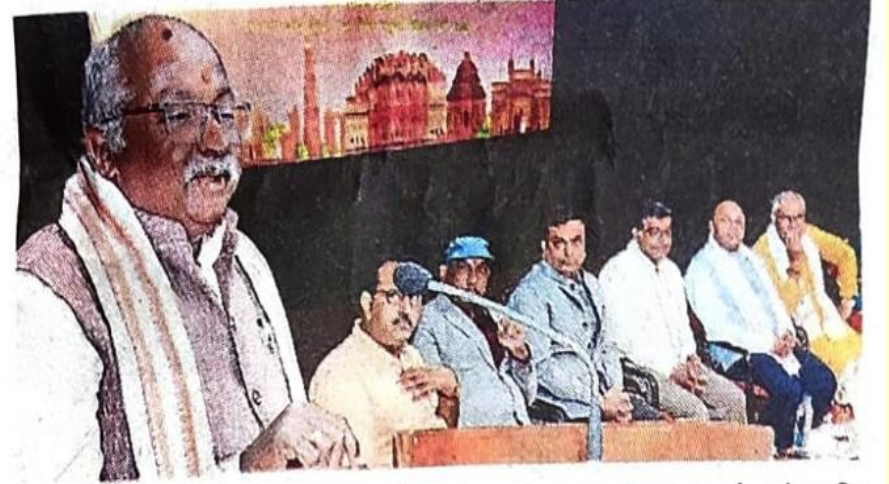
एवं व्यापकता का विमोचन भारत के प्रधानमंत्री के अधीन केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्य आचार्य यार्लगड्डु लक्ष्मी प्रसाद द्वारा किया गया। इस कृति के अतिरिक्त प्रो डॉ बलराम गुप्ता की अन्य कृतियों में बाँये से भारतीय दूतावास के निदेशक श्री संजय बेदी जी के द्वारा ह्यवैचारिकी के विविध आयाम बाँये से दूसरे प्रो ल्यूदमीला विक्टोरोवना खोखलोवा द्वारा कविता संग्रह ह्यकोरोना युग वैश्विक महामारी बहुरूपिया बाँये से तीसरी प्रो डॉ दरिगा कौकेवा मोल्डागालियोव्ना द्वारा ह्यहिंदी साहित्य में वैचारिक परिदृश्य और बाएँ से चौथी डॉ

बोता बोकुलेवा द्वारा ह्यवचना ह्य उपन्यास में कानून एवं नारी की स्थिति विमोचित की गई। प्रो डॉ बलराम गुप्ता की विमोचित कृतियों की एक अन्य प्रतियां प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग में रखने के लिए स्वीकार की गई है। विदेश के अनेक हिंदी सेवियों से हिंदी भाषा और साहित्य को लेकर डॉ गुप्ता ने गंभीर विचार मंथन किया। पहली बार आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

डॉ. अमित कुमार गुप्ता
विधि शास्त्र
वैदिक विज्ञान
केंद्र काशी हिंदू
विश्वविद्यालय वाराणसी।

भाषाएं भारतीय कला और संस्कृति की संवर्धक हैं

भारतीय भाषा सम्मेलन में बोले प्रो. विजय कुमार



इंदौर | भारतीय ज्ञान परंपरा में भाषा का अपना महत्व है। हमारी भारतीय संस्कृति की प्रवाहिका भाषा ही है। भारतीय भाषाओं में वह शक्ति है, जो हमें विकास का मार्ग दिखाती आई है। यह हमें जोड़ने का काम करती है। यही कारण है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को महत्व दिया गया है। भाषाएं, भारतीय कला और संस्कृति की संवर्धक हैं। यह बात पाणिनी वैदिक विवि के कुलपति प्रो. विजय कुमार ने कही। वे गुरुवार को डीएवीवी ऑडिटोरियम में आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, व भारतीय भाषा समिति नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में हुए इस कार्यक्रम की जानकारी देते हुए प्रो. राजेंद्र सिंह ने बताया कि सम्मेलन का केंद्रीय विषय विकसित भारत के निर्माण में भारतीय भाषाओं की भूमिका है। प्रो. विजय कुमार सीजी कुमार ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में भाषा का अपना महत्व रहा है। विशेष अतिथि शोभा ताई पैठनकर, कुलपति डॉ. रेणु जैन ने भी संबोधित किया। संचालन दिनेश दवे ने किया। आभार अवधेश शर्मा ने माना।

देश ही नहीं विदेश में भी होली की घूम अमेरिकी राजदूत ने चखा गुजिया का स्वाद





20 मार्च, 2024 को गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन किया। इस आयोजन में वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी उपस्थित थे।



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री माननीय डॉ. जितेन्द्र सिंह ने महिला वैज्ञानिकों को सम्मानित किया



8 मार्च, 2024 को राजधानी दिल्ली में अखिल भारतीय लेखिका सम्मेलन ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया



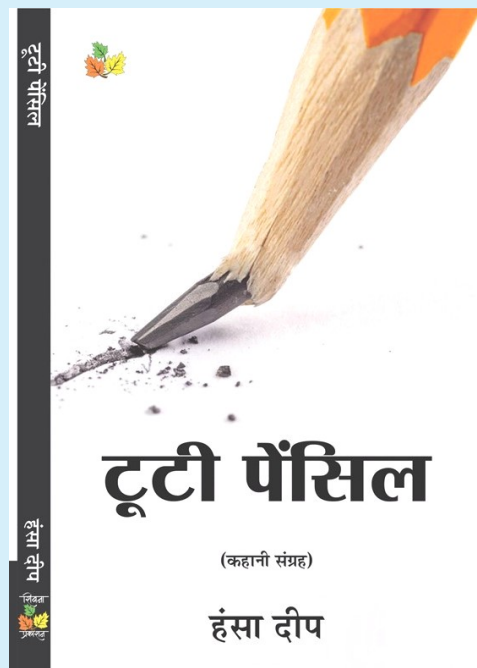
सुप्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर, वरिष्ठ लेखिका आदरणीया सूर्यबाला जी एवं वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष अनिल जोशी, सूर्यबाला जी की पुस्तकों के साथ



डेम आशा खेमका की पुस्तक का लंदन पुस्तक मेले में लोकार्पण

वातावरण प्रधान सहज एवं सक्रिय कहानियों का सम्मिश्रण है : 'टूटी पेंसिल' कहानी संग्रह

हंसादीप जी का कहानी संग्रह "टूटी पेंसिल" वातावरण प्रधान सहज एवं सक्रिय कहानियों का सम्मिश्रण है। लेखिका लम्बे समय से विदेश में रह रही हैं। अतः लेखन पर वातावरण का असर स्वाभाविक है। भाषा व शैली की सहजता एवं पात्रों की सक्रियता से इनकी कहानियाँ स्वयं बोलती हैं। हंसादीप अपने शब्द-शिल्प से पाठक की कलाई थामकर अपने साथ ले चलती हैं। इस संग्रह में कुल 18 कहानियाँ हैं। कहानी "घास" जहाँ एक तरफ यह बताने की कोशिश करती हैं कि हम भारतीय अक्सर आवरण देखकर किताब को तौलने लगते हैं। यह



बात अमूमन हमारे व्यवहार में इस तरह से समाई है कि, रहन-सहन, पहनने-ओढ़ने और उसकी रोजी-रिजक से किसी के व्यक्तित्व का आकलन कर लेते हैं। वहीं कहानी "उत्सर्जन" दो पीढ़ियों की सोच में विद्यमान विरोधाभास की भावनात्मक अभिव्यक्ति है जिसमें पुत्र और पिता के मध्य सेतु (माँ) के ढह जाने के बाद बेटे का दृष्टिकोण सही तल पर पहुँच पाता है।

कहानी "अमर्त्य" सुषुप्त अवस्था में मन में दबे भावों पर बात करती हैं जिनको हासिल न करने का मलाल अपने अंकुरण की क्षमता को जीवित बनाए रखता है। जैसे ही परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं वो प्रस्फुटित हो प्रस्फुटित हो जाता है।

नैसर्गिक छटा की स्याही में कलम डुबाकर लिखना हंसादीप का प्रिय शगल है। रंगों, फूलों, बर्फ और आसपास के फलोरा-फाना का सजीव चित्रण दिखाई देता है उनकी कहानियों में। संवेदनाओं के सीमित प्रयोग से भी परहेज नहीं है उनको। मनुष्य में जिस मानवीयता का हास हो रहा है वही संवेदनशीलता जब पशुओं में दिखाई देती है तब आकार लेती है "श्वान" जैसी कहानी।

कच्चा मन जब उम्र की भट्टी में तपता है तो पीछे लौटने लगता है। अपनों की उपेक्षा से आहत वो तब ऐसा कुछ तलाशता है जो उसे खुशी दे भले ही उसमें बचपना छलके। "दो अलहदा छोर" ऐसी ही विचारोत्तेजक कहानी है जो अपने अंत के साथ आरम्भ होती प्रतीत होती है।

"सिरहाने का जंगल" सांकेतिक कहानी कही जा सकती है। इसमें प्रतीकात्मकता का सहारा लेकर जीवन की कड़वी सच्चाइयों को बड़ी खूबसूरती से उकेरा गया है। "विखंडित" कहानी स्कूल के दिनों में ले गई जब किसी अच्छे भले साथी को परेशान करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कई लोग जाकर एक के बाद एक उससे पूछते थे "उदास क्यों हो?" "बेटा न होने की दबी टीस ने घरवालों ने बेटे को बेटा बताकर उसको भी भ्रमित कर दिया अपनी मूल पहचान से। समलैंगिकता और निर्वासन की भावभूमि पर बुनी इस कहानी में स्त्रीमन के शीशे के चकनाचूर होने की अनुगूँज देर तक प्रतिध्वनित होती महसूस होती है मन-मस्तिष्क में।

धर्म की अफीम अपरिष्कृत मस्तिष्क को अर्द्ध चेतना की उस पायदान पर ले जाती है जहाँ से कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं देता। अगर कुछ दिखता है तो वही जिसे प्रायोजित कर दिखाया जा रहा है। अलगाववाद के "हलाहल" की भावपूर्ण प्रस्तुति है समशीर्षक कहानी।

व्यक्ति की सोच ही उसके व्यक्तित्व का आधार होती है। जब सोच उसके वजूद पर पूरी तरह से काबिज हो जाए तो उसका व्यवहार भी अछूता नहीं रहता। हर बात में अपने-आप को जोड़कर परेशान होने वाली एक होम मेकर जब इस बात से भिन्न होती है वो पति व बच्चों की हर बात से स्वयं को अलग कर जियो और जीने दो का सिद्धांत अपनाती है तब नजरो के सामने छाया "कुहासा" स्वमेव छटता दिखाई देता है।

जीवन की अफरा-तफरी में हम उस मुकाम पर आ गए हैं जहाँ बातों को सोचने-समझने का समय ही नहीं रहा है शायद। या हर बात को आनन-फानन में निबटाकर निजात पाने के लिए आतुर हैं। ऐसी ही स्थिति की पड़ताल कर रही है कहानी "अप्रत्याशित"। "हाईवे 401" भी एक सांकेतिक कहानी है जो कहने के अंदाज और प्रतीकों से बहुत कुछ कह रही है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के आम आदमी के जीवन में क्या प्रभाव हुए हैं, जानने के लिए सर्वे करना होगा। परन्तु स्वयं को रचनाकार, साहित्यकार अथवा सृजक मानने वाले लोगों पर इसका क्या असर हुआ है, "आईना" दिखा रही है कहानी। जीवनसाथी के प्रेम और समर्पण की मर्मस्पर्शी बानगी है कहानी "पहिए"।

खुद को ऊँचाई पर देखने के लिए किस तरह दूसरों को सीढ़ी बनाया जा रहा है इस बात को समझा जा सकता है कहानी "मूक सूरज" में। एक वृद्धा पर चोरी का झूठा इल्जाम और अंत में सच की जीत ने 'जैसा बोया वैसा काटा' लोकोक्ति को सार्थक कर दिया। तूफान में ढहे एक पेड़ को डिस्पोज आफ करने के माध्यम से पुत्र के जीवन में घनी छांव रहे दिवंगत पिता की यादों और अपने कर्तव्यों से नजर चुराते पुत्रों की दास्तान है "पेड़" कहानी।

अब बात करते हैं संग्रह की शीर्षक कहानी "टूटी पेंसिल" की। देखा जाए तो मृत्यु का हर चेहरा भयानक ही होता होगा परन्तु सबसे भयानक छवि होती है, अपनों के चेहरे पर अपनी मौत देखना। विशेषकर जीवन साथी की धड़कनों में दबे पाँव आ रही अपनी मौत की पदचाप सुनना और उसकी आँखों में हर पल गहराते मौत के सायों को देखना मरने से ज्यादा दुश्कर है। डॉक्टर इलाज करने के लिए, आज स्वयं इतना मजबूर है कि अनगिनत जाँचों के परिणाम और बीमार के पारिवारिक इतिहास पर आश्रित है। एक गलत परिकल्पना किस तरह से मौत बन ज़िन्दगी को डराने लगती है और आदमी जिंदा लाश में तब्दील हो जाता है इस बात का जीता-जागता उदाहरण है यह कहानी।

इस संग्रह की सभी 18 कहानियाँ अपने अलग फ्लेवर और खुशबू से पाठक को बाँधे रखने में सक्षम हैं। कथ्य का चयन और निर्वहन दोनों अनुपम हैं। पाठकों की स्वीकृति एवं भरपूर प्यार मिलेगा संग्रह को, ऐसा मेरा मानना है। सामग्री व मुद्रण गुणवत्तापूर्ण हैं।

(समीक्षक - मुकेश दुबे)

स्व से सर्व की यात्रा का मार्ग प्रशस्त डायरी : रूहानी रात और उसके बाद

डायरी लेखन में समाई निजता पाठक को खास तरह के गोपन और सम्मोहन के साथ अपनी ओर खींचती है, शायद इसलिए कि यह किसी को उसकी निजता में व्यक्त करती है। शायद इसीलिए सिद्धार्थ से गौतम में रूपांतरण से अधिक यशोधरा के एकांत को पढ़ने की लालसा बलवती होने लगती है! चौबीस घंटों के चक्रव्यूह में कौन क्या अर्जित करता है और क्या



अर्जित करने के लिए किसका परित्याग कर देता है, यह प्रश्न सदा से ही डायरी को लोकप्रिय बनाता रहा है ! अलका सिन्हा की डायरी 'रूहानी रात और उसके बाद' कई अनदेखे, अनसुलझे प्रसंगों से होकर गुजरती है। इसमें स्पंदित उनकी रचनात्मक प्रसव पीड़ा उसे और भी रोचक तथा शोधपरक बना देती है। 'रूहानी रात और उसके बाद' इस तथ्य को संपुष्ट करती है कि कैसे कोई घटना कभी जीवन को अर्थ के नए उजास से भरती है तो कभी रचनात्मक लेखन का आधार बनती है।

आखिर उस रात ऐसा क्या हुआ कि वह रूहानी हो गई? लेखिका को क्यों आखिर तिहाड़ जेल जाना पड़ा और उसकी सुरंगनुमा दीवारों के भीतर होने का अहसास कैसा था?

पर्यटन में दक्षिण भारतीय जोड़े का बार-बार आंखों के सामने आ जाना किस तरह वैचारिक परिमार्जन का प्रतीक बन जाता है? ऐसे अनेक प्रश्नों को यह कृति उकेरती है।

“मैं रत्नागिरि,” महिला ने सधन्यवाद अपना परिचय दिया, “ये मेरा छोटा भाई है।”

मैंने दिलचस्पी दिखाए बिना अपनी नजर घुमा ली। अगर पुरुष मित्र को पुरुष मित्र कहने का साहस नहीं, तो कुछ मत कहो। मैंने कौन-सा परिचय पूछा है! मैं प्लास्टिकी मुस्कराहट के साथ आगे बढ़ने लगी तो वह भी मेरे साथ हो ली।” (पृ. 95)

यह डायरी कई प्रश्न उठाती है ----- पर्यटन में दक्षिण भारतीय जोड़े का बार-बार आंखों के सामने आ जाना किस तरह वैचारिक परिमार्जन का प्रतीक बन जाता है? कैसे संभव है कि दुनिया की घटनाओं से मात्र इसलिए कोई अछूता बैठा रहे कि वह सीधे-सीधे उसके व्यक्तिगत जीवन से संबंधित नहीं? इतना ही नहीं पर्यावरण दोहन, पशु बलि और निर्भया कांड जैसे प्रसंगों के पुरजोर विरोध से सामाजिक सरोकार में बदलते चिंतन को अलका जी ने बखूबी इस डायरी में दर्ज किया गया है।

“हमने लोहे की सलाखों के पार देखा, नीचे दर्शनार्थियों की कतार दिख रही थी। मैंने हाथ जोड़ लिए। तभी एक व्यक्ति हड़बड़ाता हुआ आया। मैंने चौंककर पीछे देखा तो हतप्रभ रह गई। उस व्यक्ति के हाथ में एक तसला था जिसमें भैंसे का कटा हुआ सिर था... ताजा लहू की बूंदें टपक कर इधर-उधर बिखर रही थीं... जी अजीब-सा हो आया, मैं तुरंत बाहर निकल आई। हमने मंदिर की प्रदक्षिणा की, पंडित जी ने पूजा-अर्चना कराई मगर मैं अपने होश गंवा बैठी थी। रह-रहकर चेतना में भैंसे का कटा हुआ सिर छटपटा जाता था। मंदिर की प्रदक्षिणा करते हुए भी मन में कोई कामना, कोई इच्छा नहीं कौंधी, बस एक सवाल रट लगाता रहा -- आखिर कैसी मां हो तुम जिसे प्रसन्न करने के लिए उसी के बनाए जीवों की बलि देनी पड़ती है?”

यह डायरी केवल घटनाओं का संग्रह नहीं है, बल्कि इसके अंतरंग पन्नों में एक ऐसी गहन कथा छुपी है जो स्व से सर्व की यात्रा का मार्ग प्रशस्त करती है। शब्दों की महीन बुनकरी में माहिर अलका सिन्हा अपने काव्यात्मक गद्य के माध्यम से पाठकों को रूहानी रात की उजास तक लिए चलने को आमंत्रित करती है !

(समीक्षक - प्रो. स्वाति श्रेता)



रामधारी सिंह दिनकर

सच पूछो, तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की सन्धि-वचन संपूज्य उसी का जिसमें शक्ति विजय की।

सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

साक्षात्कार

सुप्रसिद्ध लेखिका सूर्यबाला का लेखन समकालीन कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट भूमिका और महत्व रखता है। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने अपने समाज, जीवन, परम्परा, आधुनिकता एवं उससे जुड़ी समस्याओं को खुली, मुक्त और नितांत दृष्टि से देखने की कोशिश की है। 1150 से अधिक कहानियाँ, उपन्यास एवं हास्य-व्यंग्य लिख कर, साहित्य में निरंतर योगदान करते हुए, वह अनेक पुरस्कार से समय-समय पर सम्मानित हुईं। इस अंक में 'वातायन' संस्था की अध्यक्ष, 'यूके हिंदी समिति' की उपाध्यक्षा, 'नेहरु केंद्र' की कार्यक्रम अधिकारी एवं ब्रिटेन में बसी भारतीय मूल की सुप्रसिद्ध हिंदी लेखिका दिव्या माथुर जी की सूर्यबाला जी से हुई बातचीत प्रस्तुत है....

प्रश्न-1: हाल ही में आपके नए उपन्यास 'कौन देस को वासी' को अक्षरशः

पढ़ना मेरे लिए अपने चालीस वर्षों के प्रवासी जीवन को दोबारा जीने जैसा लगा। अमेरिका में एक भारतीय विद्यार्थी वेणु के जीवन का विस्तृत उल्लेख चित्रात्मक है। माँ-बेटे के बीच यह पत्राचार क्या वास्तविक है?

नहीं दिव्या, यथार्थ जीवन में माँ-बेटे के बीच कोई पत्राचार नहीं हुआ। दरअसल यह पूरा उपन्यास, मैंने योजनाबद्ध कर एक उपन्यास की तरह लिखा ही नहीं। ये मेरी उन डायरियों के पृष्ठ हैं, जो गत कई दशकों में अनेकों बार के मेरे अमेरिकी प्रवास के दौरान लिखे गए। ऐसे हर प्रवास में छः-छः महीने रुक कर अमेरिका में रहते हुए मैंने अमेरिकी समाज को, उस समाज की स्त्री को, जर्जर विघटित होते परिवार को, तलाकशुदा माता-पिताओं के अकेले पड़ते बच्चों को, उस समाज में रहकर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते भारतीय युवाओं को, उन दिनों अमेरिका में आई मंदी में दिवलिया होते शहरों को इतने पास से देखा, महसूस किया कि वह तकलीफ़ एक डेढ़ दशकों तक मेरी डायरियों में उतरती गयी। एक तरह से यह कृति, उपन्यास के फॉर्म में परिवर्तित उन्हीं डायरियों के पृष्ठ हैं। पूरा उपन्यास अधिकांशतः फ़ोन-कॉलों के फॉर्म में है। मेरे पाठकों के अनुसार इस कृति में एक डायरी माँ की भी समानांतर चली है।

प्रश्न-2: प्रवासी साहित्य की अलग पहचान और उसकी स्वीकृति या विकास के विषय में कुछ बताइए? क्या प्रवासी साहित्य विदेशी साहित्य जैसा विस्तृत भावबोध प्रस्तुत नहीं करता?

दिव्या, मेरे देखते-देखते प्रवासी साहित्य की पहचान, मान्यता और गुणवत्ता तीनों बड़े संतोषजनक तरीके से बढ़ी हैं और इसका पूरा श्रेय प्रवासी रचनाकारों को ही जाता है। प्रारंभ में जहां अधिकांशतः नॉस्टेलिजिक साहित्य ही ज्यादा रचा गया (यद्यपि उसमें कुछ बुरा नहीं और वह स्वाभाविक था) लेकिन क्रमशः प्रवासी कलम परिपक्व होती गई और उन्होंने पश्चिमी समाज की सच्चाइयों और विडंताओं को शीशे की तरह अपने लेखन में उतारा। पहली बार हिंदी पाठक उस समाज को इतने करीब से जान, समझ पाया। रही बात गहरे भावबोध की तो यह प्रवासी या विदेशी अथवा भारतीय लेखन पर नहीं, बल्कि इस पर निर्भर करता है कि लेखक की रचनात्मक संवेदना कितनी गहरी है। किसी विषय को वह कितनी गहराई तक स्पर्श कर पाता है.... और इन दिनों आप के साथ-साथ कितने अन्य प्रवासी लेखक हैं जिसका लेखन इस चुनौती पर खरा उतरता है।

प्रश्न-3: यदि आपके पास कोई विकल्प होता तो आप एक लेखिका के अतिरिक्त क्या बनतीं? क्या आपका स्त्री होना आपके लेखन को प्रभावित करता है?

मैं लेखिका बनी नहीं, बनना चाहा भी नहीं कभी.... जाने कैसे अनायास बनती चली गई, वह एक अलग कहानी है। मैं तो अपने दुःखों, संघर्षों से मुक्ति के लिए अनायास कलम की शरण में चलती चली गई और लोगों द्वारा लेखिका मान ली गई।

लेखन का विकल्प! शायद नृत्य करना पसंद करती या फिर ड्रबकर शास्त्रीय संगीत सीखती या शायद अभिनय के क्षेत्र में जाती। आपके प्रश्न का उत्तरार्ध कि क्या मेरा स्त्री होना मेरे लेखन को प्रभावित करता है?... इसके कई पक्ष हो सकते हैं। मेरी समझ से मेरे लेखन को प्रभावित करने वाली, जीवन में प्रेम, स्त्री और स्थितियों आदि से जुड़ी मेरी दृष्टि थी, न कि मेरा स्त्री होना। जो दुर्दांत संघर्ष मैंने जीवन में किया, जो चुनौतियां मैंने झेली उस अवसाद और करूणा ने मेरे लेखन को प्रभावित किया होगा।

प्रश्न-4: मेरे विचार में लेखन विकास की एक सतत् प्रक्रिया है। क्या यही आपका उद्देश्य था। आपके एक उत्तम लेखक बन जाने के दो मुख्य कारण क्या हैं?

आपकी बात अक्षरशः सच है। किसी भी रचनाकार की लेखन-यात्रा विकास की एक सतत् प्रक्रिया ही होती है.... लेकिन यह विकास अनायास होता चलता है। हम कोई लक्ष्य रखकर सायास यह नहीं

करते। मेरी आधी सदी की लेखन यात्रा के दौरान जहां तक मुझे ध्यान आता है, मैंने सिर्फ अपनी आंतरिक प्रेरणा से लिखा, आत्मतृप्ति के लिए। अलग-अलग पत्रिकाओं की वैचारिक दृष्टि, अपेक्षाओं और मांगों के साथ कोई समझौता नहीं किया। साहित्य से जुड़े आंदोलनों, ट्रेंडों या विमर्शों को लेकर भी लिखने का मन कभी नहीं हुआ। अपनी धुन, अपने जुनून में लिखा। दिव्या!

आप उत्तम शब्द हटा लीजिए तो छोटे मुंह बड़ी बात का खतरा उठाते हुए भी मैं कहूंगी कि अपनी हर रचना के साथ मेरी कलम जैसे तीर्थयात्रा पर निकलती थी।

प्रश्न-5: आप क्या नया करना चाहती हैं, जो अब तक नहीं किया। अपने नए उपन्यास के विषय में कुछ बताइए?

दिव्या! मैंने अपने लेखन को महत्वाकांक्षा की तरह कभी लिया ही नहीं। लिखना मेरा सुख, मेरे दुःख, अवसादों की शरणस्थली रहा। हर रचना मेरे लिए एक उपलब्धि, आत्मिक तृप्ति होती है। बेशक जो अब तक लिखा उससे अलग उससे बेहतर अवश्य लिखना चाहूंगी लेकिन मैं उसकी तलाश में भटकती, परेशान नहीं होती। पहली कहानी 'जीजी' और अंतिम कहानी 'बहनों का जलसा' तब सब कुछ अनायास ही रचा.... हमेशा मेरे आंतरिक आवेग ने मुझे झकझोर कर कलम थमायी है। अपनी प्रतिस्पर्द्धा स्वयं अपने आप से होती है मेरी.... वैसे इन दिनों मैं अपने आत्मसंस्मरणों 'डि'प सा'ब की तीसरी बेटा' का अंतिम ड्राफ्ट देख रही हूँ। क्योंकि मेरा जीवन बहुत सारे बाहरी और आंतरिक झंझावातों से भरा रहा है।

प्रश्न-6: आपकी कौन सी रचना ऐसी है जिसे पूर्ण करने में आपको अधिक परिश्रम करना पड़ा अथवा दुविधापूर्ण स्थिति रही हो.....

परिश्रम करने जैसी तो कोई बात नहीं। मैं लिखने में कोई मशक्कत नहीं करती। लेकिन हां, 'वेणु की डायरी....' शीर्षक उपन्यास जब लंबा होता चला जा रहा था और समय भी सात आठ वर्ष होने को आये थे तो लगा जैसे समय ज्यादा तेज़ रफ़्तार से भागता जा रहा है और उपन्यास पिछड़ता जा रहा है। अब वेणु का पीछे लौटना असंभव है। कहीं न कहीं वेणु भी अपनी मुक्ति चाहता है.... 'शायद दस पंद्रह वर्ष पहले का समय होता तो नॉस्टेलिज्या से ग्रस्त वेणु भारत वापस लौट आता। लेकिन आज, अब विश्व नागरिकता की स्थितियां हैं। और वही हुआ। वेणु जीता, मैं हारी। वेणु भारत नहीं लौटता। पर उसका बेटा और उसकी गर्लफ्रेंड आते हैं, एक डच व्यक्ति, जॉन मार्टिन की भारत से जुड़ी बातों से प्रभावित होकर... वास्तविक भारतीयता को जानने समझने के एक संकेत के रूप में... सच कहूं तो मैंने अपनी परंपराओं और संस्कृति की भव्यता और विराटता को अमेरिकी समाज में रह कर ही जाना। वही दिखाना मेरा मंतव्य भी था।

प्रश्न-7: 'हिन्दी का अस्तित्व संकट में है' क्या आप इस बात से सहमत हैं? यदि हमारी भाषाएँ और बोलियाँ लुप्त हो जाएँ तो क्या उनके साथ भारतीय संस्कृतियों का इतिहास और विकास भी लुप्त हो जाएगा?

हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि दोनों का अस्तित्व निश्चित रूप से संकट में है। इसके लिए हम हिंदी वाले कम दोषी नहीं। हममें ऐसी कुंठा और हीनता बोध सवार रहता है कि हम हिंदी को अपने कार्य व्यवहार की भाषा नहीं बना पाते। और अगर भाषा और लिपि लुप्त हो जाएगी तो संस्कृति कैसे सुरक्षित रख पाएंगी! भाषा सिर्फ शब्दों का समूह नहीं, सभ्यता और संस्कृति की संवाहिका होती है। आज की स्थिति को ही लें तो एक तरह से हम अपनी संस्कृति की जूठन पर ही पल रहे हैं।

प्रश्न-8: आप अपने जीवन में अब तक की सबसे बड़ी व्यक्तिगत उपलब्धि क्या मानती हैं?

एक तो जब मेरा पांचवीं में पढ़ने वाला बेटा स्कूल की प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कार जीतने के बाद दो-तीन प्रतिस्पर्धाओं में इसलिए नहीं बैठा जिससे वे पुरस्कार उसके दोस्त को मिल जाये.... और यह बात उसने मेरी काफी फटकार खाने के बाद बतायी।....

दो, जब कुछ वर्षों पहले एक पाठक के मेरे पास एक ही लिफाफे में, सात-आठ वर्षों के अंतराल में लिखे दो पत्र डाक से आये। दोनों पत्र मेरी कहानी 'बिन रोयी लड़की....' पढ़ कर लिखे गए थे। बहुत ही मर्मस्पर्शी, यह बताते हुए कि इस कहानी ने उसे इतना डुबोया था कि 'धर्मयुग' की वह प्रति खोजने पर वह वर्षों उस कहानी को बेचैन दूढ़ता रहा- अंततः मेरे 'कात्यायनी संवाद' संग्रह में मिली और इतने वर्षों बाद भी कहानी ने युवा से वयस्क हुए उस पाठक को उतना ही भावुक किया और तीन कि इधर ही एक पाठिका ने मुझे व्हाट्सप किया कि इधर बत्तीस वर्ष बाद उन्होंने मेरा लिखा पहला उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' दुबारा पढ़ा, वह भी एक सिटिंग में.... और वर्षों पहले की तरह ही यह कृति उनके मर्म को छू गयी।....

(साक्षात्कार - दिव्या माथुर, यू.के. द्वारा)

संरक्षक
अनिल शर्मा 'जोशी'

संपादक
डॉ. जयशंकर यादव
संपादन सहयोग
प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग
कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर,
नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए

ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109